23/5/18 (Evening)

This question paper contains 3 printed pages.

Your Roll No. .....

S. No. of Paper	: **3842**	**H**
Unique paper code	: **52051221**	
Name of the paper	: **MIL, Hindi A**	
Name of course	: **B.Com. (Prog.) (CBCS)**	
Semester	: **II**	
Duration	: **3 hours**	
Maximum marks	: **75**	

(प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1 कबीर **अथवा** मीरा की कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। 10

2 बिहारी **अथवा** घनानन्द का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

3 मैथिलीशरण गुप्त **अथवा** नागार्जुन की कविता के काव्य सौष्ठव का वर्णन कीजिए। 10

4 निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क. कबीर इस संसार कों, समझाऊँ कै बार।
पूंछ जु पकड़ै भेद की, उतर्‌या चाहै पार।।
जैसी मुष तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं।
मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जांहिं।।

अथवा

P. T. O.

तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर टेक।
हम चितवाँ थें चितणो णा हरि, हिवड़ों बड़ो कठोर।
म्हारी आसा चितवन थारी, और णा दूजा दौर।
ऊभ्याँ ठाढ़ो अरज करूँ छूँ करताँ करताँ भोर।
मीरा रे प्रभु हरि अविनासी देस्यूँ प्राण अँकोर।। 10

ख. नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत।
ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचें होत।।
बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु।।

अथवा

रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग–छकी मति लाज के साज–समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयौ घनआनंद हैं नित ही पल–पाट उघारे।
टारें टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन–मोह के तारे।।
10

ग. ऋतु बसन्त का सुप्रभात था
मन्द–मन्द था अनिल बह रहा
बालारुण की मृदु किरणें थीं
अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक–दूसरे से विरहित हो

अलग–अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशाकाल के चिर–अभिशापित
बेबस उन चकवा–चकई का
बन्द हुआ क्रन्दन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय कलह छिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

अथवा

वाचक! प्रथम सर्वत्र ही 'जय जानकी जीवन' कहो,
फिर पूर्वजों के शील की शिक्षा–तरंगों में बहो।
दुख, शोक जब जो आ पड़े, सौ धैर्यपूर्वक सब सहो,
होगी सफलता क्यों नहीं कर्त्तव्य–पथ पर दृढ़ रहो।।
10

5 किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

क. हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास

ख. आधुनिक भारतीय भाषाओं का परिचय

ग. रीतिकाव्य

घ. द्विवेदी युग

ड़ प्रगतिवाद। 5x3=15